

ऋग्वेद

मण्डल १०

सूक्त १५८

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Rigveda

Maṇḍala 10

Sukta 158

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

साराँश

इस सूक्त में तीनों लोकों के देवताओं से हमारी रक्षा करने के लिए प्रार्थना की गई है, विशेषकर हमारे नयनों की दृष्टि शक्ति बनी रहे।

Synopsis

This composition contains prayers for our protection to the governing divinities of all three realms, especially for the protection of the sight in our eyes.

सौर्यश्चक्षुः ऋषिः | सूर्याः देवताः |

छन्दः	
१	आर्ची स्वराङ् गायत्री
२	स्वराङ् गायत्री
३	गायत्री
४	निचृद् गायत्री
५	विराङ् गायत्री

sauryashchakṣhuḥ ṛṣiḥ. sooryaah devataah.

Chhandah	
1	aarchee svaraaḍ gaayatree
2	svaraaḍ gaayatree
3	gaayatree
4	nichṛid gaayatree
5	viraaḍ gaayatree

सूर्यो॑नो दि॒वस्पा॑तु वातो॑ अ॒न्तरि॑क्षात् । अ॒ग्निर्नः॑ पा॒र्थिवे॑भ्यः ॥१॥

सूर्यः नः दिवः पातु वातः अन्तरिक्षात् । अग्निः नः पार्थिवेभ्यः ॥

तीनों लोकों के देवता क्रमशः (दिवः) द्युलोक का देवता (सूर्यः) सूर्य, (अन्तरिक्षात्) अन्तरिक्ष का देवता (वातः) वायु और (पार्थिवेभ्यः) पृथ्वी का देवता (अग्निः) अग्नि (नः) हमारी वहाँ के पदार्थों से (पातु) रक्षा करें।

1. om sooryo-no divas-paatu vaato antarikshaat

agnir-nah paarthivebhyah

The divine powers of the three realms of the Universe, i.e. (sooryo) Sun, the lord of (divas) celestial realm, (agnir) Fire, the lord of the (paarthivebhyah) earth, and (vaato) Air, the lord of the (antarikshaat) space there between, (paatu) protect (nah) us from non-conductive things from their respective realms.

जोषा॑ स॒वित॒र्यस्य॑ ते॒ हरः॑ श॒तं स॒वाँ अ॒र्हीति॑ । पा॒हि नो॑ दि॒द्युतः॑ पत॑न्त्याः

॥२॥

जोष सवितः यस्य ते हरः शतम् सवान् अर्हीति । पाहि नः दिद्युतः पतन्त्याः ॥

हे (सवितः) सृष्टि के रचयिता! (यस्य) जैसे (ते) तेरा (हरः) तेज (शतम्) बहुतेरे (सवान्) सूर्य चन्द्र आदि को (अर्हीति) वश मे कर सकता है वैसे ही हमारी (जोष) प्रार्थना सुन कर (पतन्त्याः) गिरती हुई (दिद्युतः) बिजली से (नः) हमारी (पाहि) रक्षा करो।

2. om joṣhaa savitaryasya te haraḥ shatan savaam arhati

paahi no didyutah patantyaah

O (savitar) Creator! (yasya) As (te) your (haraḥ) brilliance can (arhati) control and outshine the lights from (shatan) numerous (savaam) suns and moons, similarly (joṣhaa) heed to our prayers and (paahi) protect (no) us (patantyaah) falling (didyutah) thunderbolts.

चक्षु॑र्नो दे॒वः स॒वि॒ता चक्षु॑र्न उ॒त पर्व॑तः । चक्षु॑र्धा॒ता द॑धातु नः ॥३॥

चक्षुः नः देवः सविता चक्षुः नः उत पर्वतः । चक्षुः धाता दधातु नः ॥

(सविता) सूर्य (देवः) देव का प्रकाश (नः) हमें (चक्षुः) देखने में सहायता करे, (उत) ये हरे भरे (पर्वतः) पर्वत (नः) हमारी (चक्षुः) आँखों की ज्योति बढ़ाये, वह (धाता) परमात्मा भी (नः) हमारे (चक्षुः) नेत्रों को (दधातु) बल प्रदान करे।

3. om chakṣhur-no devaḥ savitaa chakṣhurna uta parvataḥ
chakṣhur-dhaataa dadhaatu naḥ

May the (devaḥ) divine (savitaa) sunlight help (no) our (chakṣhur) sight! May (uta) these green (parvataḥ) mountains increase (na) our (chakṣhur) sight and may (dhaataa) the almighty also (dadhaatu) give strength to (naḥ) our (chakṣhur) eyes.

चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे चक्षुर्विख्यै तनूभ्यः । सं चेदं वि च पश्येम ॥४॥

चक्षुः नः धेहि चक्षुषे चक्षुः विख्यै तनूभ्यः । सम् च इदम् वि च पश्येम ॥
हमारे (चक्षुषे) नयनों में (चक्षुः) ज्योति (धेहि) दिजिए। हमारे (तनूभ्यः) शरीरों को सब कुछ (विख्यै) अलग अलग पहचानने वाले (चक्षुः) नयन दिजिए ताकि (नः) हम (इदम्) यहाँ (सम्) पास (च) और (वि) दूर समान रूप से भली भाँति (पश्येम) देख सके।

4. om chakṣhurno dhehi chakṣhuṣhe chakṣhurvikhyai tanoobhyaḥ
sañ ch-edam vi cha pashyema

O God! Please (dhehi) grant (chakṣhur) sight in (no) our (chakṣhuṣhe) eyes; bless our (tanoobhyaḥ) bodies with strong (chakṣhur) eyes that can (vikhyai) distinguish between things so that we can (pashyema) see equally well (sañ) near (cha) and (vi) far.

सुसंदृशं त्वा वयं प्रति पश्येम सूर्य । वि पश्येम नृचक्षसः ॥५॥

सुसंदृशं त्वा वयम् प्रति पश्येम सूर्य । वि पश्येम नृचक्षसः ॥
हे (सूर्य) सूर्य! (वयम्) हम (नृचक्षसः) मानव के हितकारी (त्वा) तेरे (सु) सुन्दर रूप को (संदृशं) उदय से (वि) अस्त होते हुए (पश्येम) देखें । हमारी दृष्टि समभाव वाली पक्षपात रहित हो ।

5. om su-sandrishan tvaa vayam prati pashyema soorya
vi pashyema nrichakṣhasaḥ

O (soorya) Sun! May (vayam) we (pashyema) see (tvaa) your (nrichakṣhasaḥ) benevolent (su drishan) beauty from (san) dawn to (vi) dusk! May we be impartial, free from all preconceived notions!